मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)

मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे कि मनुष्य के गुणों का मूल्य आँकित किया जाता है। मूल्य और अंकन शब्द स्पष्टतया बताते हैं कि मूल्यांकन गुणों या विशेषताओं को मापने की ही क्रिया है यह अवश्य है कि दोनों में थोड़ा सा अन्तर होता है। मूल्यांकन के अर्थ को जानकर हम इसे भली-भाँति समझ सकेंगे। मूल्यांकन का साधारण अर्थ है — मूल्यों को बताना। मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में दो शब्द आते हैं — इवैल्युवेशन और एप्रेजल (Evaluation and Appraisal) जिसमें Evaluation का अर्थ होता है 'मूल्य निर्धारण' तथा Appraisal का अर्थ है - 'मूल्य लगाना'। ध्यान से देखने पर ज्ञात होता है कि दोनों अंग्रेजी शब्दों का अर्थ मूल्य से सम्बन्ध रखता है। फिर भी दोनों के अर्थों में दृष्टिकोण का अन्तर दिखाई देता है। मूल्य वस्तुतः आन्तरिक दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है, इसमें उपयोगिता को अधिक महत्व दिया जाता है। मूल्यांकन में किसी वस्तु के क्यों, क्या और कितने का विचार किया जाता है।

"मूल्यांकन किसी वस्तु के मूल्यों को निर्धारित करने के कार्य या प्रक्रिया की ओर संकेत करता है।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मूल्यांकन शैक्षिक क्षेत्रों में बच्चे के समस्त क्षेत्रों में अर्जित गुणों से सम्बन्धित होता है।

Scanned with CamScanner

सतत् एवम् व्यापक मूल्यांकन (Continuous & Comprehensive Evaluation)

सामान्य रुप से विभिन्न लोग इस तथ्य से सहमत हैं कि अधिगम एक समय की प्रक्रिया नही है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। क्योंकि शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया एक सतत प्रक्रिया है, अतः हमारा मूल्यांकन भी एक सतत प्रक्रिया होनी चाहिए न कि एक समय का कार्यक्रम। इसके अतिरिक्त ऐसे मूल्यांकन पर बल देना चाहिए जो शिक्षण अधिगम के चलते हुए किया जाय, अर्थात् यह इसका अभिन्न अंग होना चाहिए। इस प्रकार का मूल्यांकन सतत और व्यापक मूल्यांकन (C.C.E.) के नाम से जाना जाता है। सतत और ~~मूल्यांकन~~ व्यापक मूल्यांकन योजना विद्यार्थियों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन को इंगित करती है, जिसमे विद्यार्थी के विकास के सभी पक्ष आ जाते हैं। पद 'सतत' प्रक्रिया है, अतः मूल्यांकन को पूर्ण रुप से शिक्षण और अधिगम को एक साथ समन्वित होना चाहिए। विद्यार्थियों के अधिगम की प्रक्रिया का निरन्तर और बारम्बार मूल्यांकन होना चाहिए। सतत का अर्थ अधिगम की कमियों का नियमित ~~और~~ परीक्षण और विश्लेषण भी है तथा सुधारात्मक उपायों को लागू करना और अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को उनका स्वयं का मूल्यांकन आदि करने के लिए पुनः परीक्षण और प्रतिपुष्टि करना है। अतः सतत मूल्यांकन, बालक क्या जानता है, क्या नही जानता है, अधिगम परिस्थितियों में क्या कठिनाइयाँ अनुभव करता है और अधिगम में उसकी क्या प्रगति है, जो शिक्षा का उद्देश्य है को समझने का नियमित अवसर प्रदान करता है। सार रुप में, सतत मूल्यांकन विद्यार्थी में सुधारात्मक प्रक्रियाओं और शिक्षण में सुधार के माध्यम से प्रतिपुष्टि प्रदान करता है ताकि उनकी उपलब्धि और प्रवीणता के स्तर में सुधार किया जा सके।

Scanned with CamScanner